

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 6, रहस्योद्घाटन का अर्थ और हमारी आवश्यकता, बाह्य सामान्य रहस्योद्घाटन, भजन 19:1-6 और रोमियों 1:18-25

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन पवित्र शास्त्र में रहस्योद्घाटन पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 6 है, रहस्योद्घाटन का अर्थ और हमारी आवश्यकता। बाह्य सामान्य रहस्योद्घाटन, भजन 19:1-6 और रोमियों 1:18-25।

कृपया मेरे साथ प्रार्थना करें। दयालु पिता, हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने सामान्य प्रकाशन में मानव जाति के लिए और विशेष प्रकाशन में अपने लोगों के लिए खुद को प्रकट करने का फैसला किया, खासकर आपके बेटे के अवतार में और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं और नए नियम में प्रेरितों के उपदेशों में और सबसे खास तौर पर आपके लिखित वचन में। हम आपको धन्यवाद देते हैं, हमें आशीर्वाद देते हैं, हम प्रार्थना करते हैं, और हमारे परिवार, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से मांगते हैं। आमीन।

प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर को जानना। हम प्रकाशन के अर्थ को देखना चाहते हैं और फिर प्रकाशन की हमारी आवश्यकता को देखना चाहते हैं।

एक मानक शब्दकोश रहस्योद्घाटन को “दिव्य या अलौकिक साधनों द्वारा ज्ञान, निर्देश आदि का प्रकटीकरण या संचार” के रूप में परिभाषित करता है। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी।

अंग्रेजी शब्द रहस्योद्घाटन लैटिन रहस्योद्घाटन से निकला है, जिसका अर्थ है पर्दाफाश करना, उजागर करना, नंगा करना। वुल्गोट इस लैटिन शब्द का उपयोग ग्रीक एपोकैलिप्सिस का अनुवाद करने के लिए करता है, जिसका अर्थ है रहस्योद्घाटन प्रकटीकरण। नया नियम आमतौर पर एपोकैलिप्सिस का उपयोग पहले से छिपी हुई सच्चाइयों को उजागर करने के लिए करता है, खासकर भगवान और उनकी योजना के बारे में।

पुराने नियम का व्यापक दृष्टिकोण कि परमेश्वर ने इस्राएल को अपनी इच्छा में स्वयं को ज्ञात कराया है, इस प्रयोग के पीछे है। प्रकाशितवाक्य का यह विचार पुराने और नए नियम में इतनी दृढ़ता से चलता है कि हम प्रकाशितवाक्य की एक बाइबिल अवधारणा के बारे में बात करने में सक्षम हैं। परमेश्वर स्वयं को विभिन्न तरीकों से संप्रेषित करता है, जिन्हें अक्सर सामान्य और विशेष प्रकाशन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

सामान्य प्रकाशन का तात्पर्य सभी व्यक्तियों के लिए हर समय और हर जगह परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण से है, जो दर्शाता है कि वह कौन है और सभी लोगों को जवाबदेह बनाता है। सामान्य प्रकाशन का तात्पर्य सभी लोगों के लिए हर समय और हर जगह परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण

से है, जो दर्शाता है कि वह किस भाग में है और सभी लोगों को परमेश्वर के रूप में उसके प्रति जवाबदेह बनाता है। विशेष प्रकाशन का तात्पर्य विशिष्ट समय और स्थानों पर विशेष लोगों के लिए परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण से है, जो उन्हें उसके साथ एक मुक्तिदायी संबंध में प्रवेश करने में सक्षम बनाता है।

एक बार फिर, विशेष प्रकाशन, सामान्य प्रकाशन के विपरीत, सामान्य प्रकाशन से अलग, विशिष्ट समय और विशिष्ट स्थानों पर विशेष लोगों के लिए परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण को संदर्भित करता है, जिससे वे उसके साथ एक मुक्तिदायी संबंध में प्रवेश कर सकें। इस प्रकार, हम कहते हैं कि विशेष प्रकाशन मुक्तिदायी है, लेकिन सामान्य प्रकाशन नहीं है। आगे और स्पष्टीकरण दिया जाएगा।

मिलार्ड एरिक्सन की ईसाई धर्मशास्त्र, पृष्ठ 177 से 245, सामान्य और विशेष प्रकाशन में अंतर करने के संबंध में सहायक है। मिलार्ड एरिक्सन की ईसाई धर्मशास्त्र, 177 से 245। प्रकाशन के लिए हमारी ज़रूरतें दोहरी हैं।

ईश्वर अनंत है, और हम सीमित हैं। ईश्वर पवित्र है, और हम पापी हैं। हमें रहस्योद्घाटन की आवश्यकता है, ईश्वर अनंत है, और हम सीमित हैं।

ईश्वर अनंत सृष्टिकर्ता है, और हम उसके सीमित प्राणी हैं। अनंत से हमारा मतलब है कि ईश्वर असीमित है। वह सीमित है, जैसा कि यह था, अपनी विशेषताओं से बेहतर परिभाषित।

इसलिए, वह इस अर्थ में असीमित नहीं है कि वह अपवित्र या अज्ञानी बन सकता है। वह परिपूर्ण है। वह अपनी सभी परिपूर्णताओं में असीमित है, जो इसे कहने का एक अच्छा तरीका है।

पवित्रशास्त्र इस वास्तविकता की ओर संकेत करता है, विशेष रूप से उसकी शक्ति और समझ का उल्लेख करता है। भजन 147.5, उद्धरण, हमारा प्रभु महान है, उसकी शक्ति असीम है। उसकी समझ असीम है।

हमारा प्रभु महान है, उसकी शक्ति बहुत बड़ी है। उसकी समझ अनंत है। भजन 147.5. यशायाह कहता है, उद्धरण, प्रभु सनातन परमेश्वर है, पूरी पृथ्वी का निर्माता है।

वह कभी भी कमज़ोर या थका हुआ नहीं होता। उसकी समझ की कोई सीमा नहीं है। यशायाह 40:28. यह अनंत परमेश्वर तुलना से परे महान है।

वह अकेला ही महान और महान है। यशायाह 57.15. और उसके जैसा कोई नहीं है। इस महान अनंत परमेश्वर की तुलना में, हम बहुत सीमित हैं।

हम कभी भी परमेश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते या उसे जान नहीं सकते जब तक कि वह हमें यह बताने की पहल न करे कि वह कौन है। शुक्र है कि हमारा अनंत परमेश्वर उदारता से अपने आपको हम पर, अपने कमज़ोर, सीमित प्राणियों पर प्रकट करता है। ग़लतफ़हमी न पालें।

भजन 139 कहता है कि हम अद्भुत तरीके से बनाए गए हैं, और ऐसा ही है। लेकिन अभी हमारा मुद्दा यह है कि हम अद्भुत तरीके से बनाए गए हैं। सृष्टिकर्ता-सृष्टि का भेद हमेशा बना रहता है।

नई पृथ्वी पर पुनर्जीवित समग्र प्राणियों के रूप में, 1 कुरिन्थियों 15 हमारे पुनरुत्थान शरीर और व्यक्तित्व को अविनाशी, अमर, शक्तिशाली, गौरवशाली और आध्यात्मिक के रूप में वर्णित करता है, अर्थात्, पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित एक ऐसे तरीके से जिसे हम समझ भी नहीं सकते हैं। और यह सब उस अनंत जीवन का वर्णन है जिसका हम नई पृथ्वी पर आनंद लेंगे। फिर भी, हम अभी भी परमेश्वर के प्राणी होंगे।

अब, हम उसके हैं; जहाँ तक विश्वासियों की बात है, हम उसके छुड़ाए हुए प्राणी हैं जिनके पास नश्वर शरीर में अनन्त जीवन है। फिर, पुनरुत्थान में, हम छुड़ाए हुए प्राणी होंगे जिनके पास अमर शरीर में अनन्त जीवन है। लेकिन हमारी प्राणी स्थिति स्थायी है।

ओह, इसकी एक शुरुआत थी; हमें बनाया गया था, लेकिन इसका कोई अंत नहीं है। इसके विपरीत, बेशक, भजन 90, अनंत काल से अनंत काल तक, आप ईश्वर हैं। ईश्वर की कोई शुरुआत नहीं है, और उसका कोई अंत नहीं है।

दो कारणों से हमें रहस्योद्घाटन की आवश्यकता है। हमारी सीमाएँ पहली हैं। एक अनंत ईश्वर के सामने, जो अपनी सभी पूर्णता में असीमित है, हम बहुत सीमित हैं।

दूसरा, हमें रहस्योद्घाटन की आवश्यकता है क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, और हम नहीं हैं। सीमाओं से सीमित होने के अलावा, हम मनुष्य पापी हैं। स्वर्गदूत घोषणा करते हैं, उद्धरण, पवित्र, पवित्र, पवित्र सर्वशक्तिमान प्रभु है।

उसकी महिमा पृथ्वी को भर देती है, यशायाह 6:3. इस पर यशायाह चिल्लाता है, हाय मुझ पर, क्योंकि मैं नाश हो गया, क्योंकि मैं अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ, क्योंकि मेरी आँखों ने राजा, सेनाओं के यहोवा को देखा है, यशायाह 6 5. परमेश्वर अपना क्रोध प्रकट करता है, जिसे लोगों की सभी अधर्मी और अधर्म के विरुद्ध उद्धृत किया गया है, रोमियों 1:18. वास्तव में, पतित मनुष्य उद्धृत करते हैं, उनकी सोच बेकार हो गई, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए। बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए, रोमियों 1:21 और 22.

अपनी सीमाओं से सीमित और अपने पापों से अंधे होकर, हम कभी भी परमेश्वर या उसके बारे में सच्चाई को जानने में सफल नहीं हो सकते। परमेश्वर के रहस्योद्घाटन के अलावा, सभी मनुष्यों में उसके बारे में गलत धारणाएँ हैं, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, उसने कृपापूर्वक खुद को आदम और हव्वा और उसके बाद से हर इंसान को बताया। हालाँकि हम खो गए हैं और उसके बारे में हमारा ज्ञान विकृत है, परमेश्वर खुद को इसमें प्रकट करता है।

इसलिए, रहस्योद्घाटन अनुग्रहपूर्ण है। मैं इनमें से कुछ टिप्पणियों के लिए अपने पुराने मित्र डेविड जी डनबर की मदद को स्वीकार करता हूँ। अब हम सामान्य प्रकाशन के माध्यम से ईश्वर को जानने की ओर बढ़ते हैं।

हमारा अगला शीर्षक है ईश्वर स्वयं को सृष्टि में प्रकट करता है। सामान्य प्रकाशन के माध्यम से ईश्वर को जानना, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, ईश्वर स्वयं को सामान्य और विशेष प्रकाशन दोनों में प्रकट करता है। उत्तरार्द्ध में, वह स्वयं को विशेष समय और स्थानों पर विशेष लोगों को ज्ञात कराता है, जैसा कि हमने पहले कहा था।

पहले वाले, सामान्य प्रकाशन में, वह सभी समय और स्थानों में सभी लोगों को खुद को ज्ञात कराता है। सामान्य प्रकाशन के तीन मुख्य रूप हैं, जिनकी हम बारी-बारी से जांच करेंगे, अगर प्रभु चाहेंगे।

सृष्टि, मानवता और विधान। परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाए गए संसार में स्वयं को प्रकट किया है, जिसमें मनुष्य भी शामिल हैं। परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में रचकर और सृष्टि से ही मानव हृदय पर अपना नियम लिखकर मानवता में स्वयं को प्रकट किया है।

जैसा कि हम देखेंगे, परमेश्वर अपने आपको विधान या इतिहास में प्रकट करता है। इसलिए, सामान्य प्रकाशन के शीर्षक के अंतर्गत, हमें सृष्टि, मानवता और विधान में प्रकाशन मिलता है। परमेश्वर अपने आपको सृष्टि में प्रकट करता है।

हम इन अंशों की जाँच करना चाहते हैं: भजन 19, रोमियों 1, और यूहन्ना 1. हम उन्हें विस्तार से नहीं देखेंगे, इसलिए आइए भजन 19 की ओर मुड़ें। भजन 19 में परमेश्वर द्वारा अपने संसार में, पद 1 से 6 में, और फिर पद 7 और उसके बाद अपने वचन में खुद को प्रकट करने की बात कही गई है। भजन 19:7 से 11, 12 से 14 में भजन को प्रार्थना के साथ समाप्त किया गया है।

भजन 19, आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है, और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला की घोषणा करता है। दिन-प्रतिदिन बातें करता है, और रात-प्रतिदिन ज्ञान प्रकट करता है। कोई आवाज़ नहीं है, न ही कोई शब्द है, जिसका शब्द सुनाई न दे।

उनकी आवाज़ धरती से बाहर निकलती है, और उनके शब्द दुनिया के छोर तक जाते हैं। उनमें, उसने सूरज के लिए एक तम्बू खड़ा किया है, जो एक दूल्हे की तरह अपने कमरे से निकलता है, और एक मजबूत आदमी की तरह, खुशी के साथ अपना रास्ता चलाता है। इसका उदय स्वर्ग के एक छोर से होता है और इसका चक्कर उनके छोर तक होता है, और इसकी गर्मी से कुछ भी छिपा नहीं है।

इसलिए, भजन सृष्टि में सामान्य प्रकाशन से परमेश्वर के वचन में विशेष प्रकाशन की ओर बढ़ता है। प्रभु का नियम परिपूर्ण है, आत्मा को पुनर्जीवित करता है। प्रभु की गवाही पक्की है, सरल लोगों को बुद्धिमान बनाती है।

यहोवा के उपदेश सत्य हैं, हृदय को आनन्दित करते हैं। यहोवा की आज्ञा पवित्र है, आँखों को ज्योति प्रदान करती है। यहोवा का भय पवित्र है, सदा तक बना रहता है।

से भी अधिक मनभावन हैं, बल्कि बहुत अधिक उत्तम सोने से भी अधिक। वे शहद और मधुछत्ते से भी अधिक मीठे हैं।

इसके अलावा, आपके सेवक को उनके द्वारा चेतावनी दी गई है। उन्हें रखने में, महान पुरस्कार है। हमारा ध्यान विशेष रूप से पहले छह छंदों पर है, जो इसे वास्तव में पुराने नियम के शास्त्रीय पाठ के रूप में वर्णित करते हैं, जो ईश्वर के अपने संसार में, अपनी रचना में रहस्योद्घाटन के सिद्धांत के लिए टेक्स्टस क्लासिकस है।

आकाश परमेश्वर की महिमा का बखान करता है, और ऊपर आकाश उसकी हस्तकला का बखान करता है। यह एक समानार्थी समानता है, और यह हमें रूपक का उपयोग करते हुए बताता है कि आकाश वास्तव में बोलता नहीं है। ओह, लेकिन वे, मानो, लाक्षणिक रूप से बोलते हैं।

वे परमेश्वर की महिमा, उसकी सुंदरता, उसकी भव्यता का बखान करते हैं। और ऊपर आकाश, स्वर्ग के समानांतर, उसकी हस्तकला का बखान करता है। परमेश्वर द्वारा अपने संसार की रचना उसकी महानता, उसकी महिमा को दर्शाती है, और यह इस तथ्य की गवाही देती है कि वह इसका निर्माता है।

हर आदम कहता है, मानो भगवान ने मुझे बनाया, भगवान ने मुझे बनाया। मैंने आपसे पहले एक सहकर्मी के बारे में बात की थी जो एक ईसाई धर्मोपदेशक बन गया और एक सेमिनरी में पढ़ाता था, जो एक युवा व्यक्ति के रूप में इतना उदास था कि वह आत्महत्या करने के लिए एक पहाड़ी पर चला गया। और जब उसने आसमान, आसमान, सूरज, सुंदरता को देखा, और उसने अपनी आँखें नीची कीं और पेड़ों और घास और इन सब की सुंदरता और इन सब के क्रम को देखा, तो उसे यकीन हो गया कि ऐसा सुंदर काम करने के लिए एक कारीगर होना चाहिए।

और वास्तव में, उसने प्रभु को जाना, आगे बढ़ा, अध्ययन किया, सेवा की, और अपने जीवनकाल में बहुत से लोगों की मदद की। आकाश परमेश्वर की महिमा का बखान करता है, और ऊपर आकाश उसकी हस्तकला का बखान करता है। इसलिए यह रहस्योद्घाटन आकाश के नीचे हर जगह, यानी हर जगह होता है।

यह सार्वभौमिक है, इसलिए इसका नाम सामान्य रहस्योद्घाटन है। इसलिए यह उन सभी लोगों के लिए सुलभ है जो स्वर्ग और परमेश्वर की सृष्टि को देख या अनुभव कर सकते हैं। हम यह सवाल पूछ सकते हैं कि यह कब घटित होता है? और श्लोक 2 हमारे लिए इसका उत्तर देता है।

दिन-प्रतिदिन भाषण की वर्षा होती है, रूपक का विस्तार होता है, और रात-रात भर ज्ञान प्रकट होता है। हर दिन, हर रात, सभी मनुष्य, पापी और संत समान रूप से, इस तथ्य से घिरे रहते हैं कि ईश्वर एक गौरवशाली प्राणी है और ईश्वर उन सभी का निर्माता है जो वे अपनी दुनिया में देखते हैं। आदिम लोगों के पास न केवल बाइबल बल्कि लेखन और लिखित भाषा तक भी पहुँच नहीं थी, उनके पास एक देवता या देवताओं की अवधारणाएँ थीं।

अब, वे पाप के कारण, आदम के पाप और अपने स्वयं के पापों के कारण त्रुटिपूर्ण हैं, लेकिन फिर भी, क्या आदिम लोगों जैसी कोई चीज़ है जो पूरी तरह से नास्तिक है? मुझे ऐसा नहीं लगता। वे ईश्वर की रचना की पूजा कर सकते हैं, जो एक अजीब तरीके से उसकी महानता की गवाही

देती है, लेकिन यह उसकी रचना है, और यह ईश्वर नहीं है। सीएस लुईस ने अपने धर्म परिवर्तन के परिणामों में से एक को प्रसिद्ध रूप से समझाया, अब जब उन्होंने दुनिया को देखा, तो यह बहुत बेहतर था क्योंकि अब वह इसे सब कुछ के रूप में नहीं देखते थे, जैसा कि उन्होंने तब देखा था जब वह एक सर्वेश्वरवादी थे, यानी, यह विचार कि ईश्वर ही सब कुछ है और सब कुछ ईश्वर का हिस्सा है।

अब वह दुनिया को सृष्टिकर्ता परमेश्वर के कार्य का उत्पाद मानता था, और वह आश्चर्यचकित था। वह आश्चर्यचकित था। उसे तैराकी में अपना समय विशेष रूप से अच्छा लगता था, और मुझे लगता है कि यह तब होता था जब वह सुबह अपनी प्रार्थना करता था और तैराकी के लिए जाता था, और उसे पानी और उसके आस-पास के दृश्य, ध्वनियाँ और गंध बहुत पसंद थी।

वह परमेश्वर की अच्छी दुनिया में आनन्दित हुआ। श्लोक 3 के दो अनुवाद संभव हैं; वहाँ न तो कोई भाषण है और न ही उनके शब्द; वास्तव में, यह समझाना कि यह एक रूपक है, अनावश्यक लगता है, लेकिन कविता कविता है जिसकी आवाज़ नहीं सुनी जाती। फिर से, वह अनुवाद, जो ESV करता है, इसका मतलब होगा कि मैं यहाँ केवल काव्यात्मक रूप से बोल रहा हूँ, मैं केवल रूपक रूप से बोल रहा हूँ, शाब्दिक रूप से नहीं, या इसका अनुवाद किया जा सकता है कि वहाँ न तो कोई भाषण है और न ही उनके शब्द जहाँ उनकी आवाज़ नहीं सुनी जाती है।

अर्थात्, सृष्टि में परमेश्वर का प्रकाशन न केवल प्रतिदिन और रात्रि में जारी रहता है, बल्कि यह सार्वभौमिक भी है। वास्तव में, चाहे हम पद 3 का अनुवाद कैसे भी करें, पद 4 से 6 उसी सत्य की गवाही देते हैं, जो सामान्य प्रकाशन की सार्वभौमिकता है। पद 2 इसकी स्थिरता को दर्शाता है, यह तथ्य कि यह हमेशा दिन-रात चलता रहता है।

4 से 6 तक, सूर्य को आकाश में प्राथमिक गोला, मानव अवलोकन का प्राथमिक विषय, एक परिक्रमा बनाता है और इस प्रकार दिखाता है कि ईश्वर का प्रकाशन हर जगह है। सृष्टि में उनका प्रकाशन। उनकी आवाज़ पूरी धरती पर फैलती है, उनके शब्द दुनिया के अंत तक पहुँचते हैं।

यह सार्वभौमिकता का कथन है। उनमें, उसने सूर्य के लिए एक तम्बू भेजा है। यहाँ एक मानवीकरण आता है: सूर्य को एक धावक या दूल्हे के रूप में चित्रित किया गया है।

उनमें, उसने सूरज के लिए एक तम्बू बनाया है, जो एक दूल्हे की तरह अपने कमरे से निकलता है, अपनी पत्नी को लेने जा रहा है, और एक मजबूत आदमी की तरह, खुशी के साथ अपना रास्ता चलाता है। तो, सूरज अपने तम्बू से बाहर आता है और मानो आसमान में अपनी दौड़ शुरू कर देता है। यह उग रहा है; सूरज का उगना आकाश के एक छोर से और उनके अंत तक के चक्कर में होता है।

और इसकी गर्मी से कुछ भी छिपा नहीं है। यह फिर से है, इसलिए नाकों की गिनती या आयतों की संख्या के मामले में सबसे बड़ा ध्यान न केवल अपनी सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन की

वास्तविकता और इसकी स्थिरता पर है, बल्कि इसकी सार्वभौमिकता पर भी है। प्रत्येक मनुष्य सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन के संपर्क में है।

यह एक जीवंत व्याख्या है। यहाँ कुछ नोट्स हैं जो उसी बात को प्रस्तुत करते हैं। मैं उन्हें जोर देने और पूर्णता के लिए करता हूँ।

भजन 19, 1 से 6, परमेश्वर सृष्टि में हमारे बाहर खुद को प्रकट करता है, जैसा कि भजन 19 में कहा गया है। वह हमारे हृदयों पर लिखे गए नियम में हमारे अंदर खुद को प्रकट करता है। वह खुद को हमारे बाहर प्रकट करता है, लेकिन वास्तव में इसमें हम भी शामिल हैं।

यहाँ हमारा ध्यान हमारे बाहर, जिसमें हम भी शामिल हैं, पर हमारे अंदर नहीं, पर है। उनके बाहरी सामान्य प्रकाशन में, यही वह शब्दावली है जिसका हम उपयोग करते हैं। परमेश्वर अपने हृदय पर लिखे गए नियम में खुद को प्रकट कर रहा है।

परमेश्वर की छवि का एक पहलू आंतरिक सामान्य प्रकाशन है। हम अब तक आकाश और सूर्य आदि के बारे में जो बात कर रहे हैं, वह उसका बाहरी सामान्य प्रकाशन है, हमारे बाहर उसका प्रकाशन, लेकिन इसमें हमारे शरीर और मन आदि शामिल हैं। परमेश्वर सृष्टि में हमारे बाहर खुद को प्रकट करता है, जैसा कि भजन 19 में घोषित किया गया है।

आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है, और आकाशमण्डल उसके हाथों के कामों को प्रगट करता है। क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल। शायद थोड़ा अलग अनुवाद देखना मददगार होगा।

इसे बाह्य सामान्य प्रकाशन कहते हैं। इस प्रकाशन का तरीका ईश्वर की रचना है, जो सृष्टिकर्ता के बारे में कुछ ज्ञान प्रकट करता है। हमने अभी तक इस सारे ज्ञान का सारांश नहीं दिया है।

हमने अभी शुरू किया और कहा कि यह उसकी महिमा और इस तथ्य को दर्शाता है कि वह सृष्टिकर्ता है। इस सृष्टि की सामग्री ईश्वर की महिमा और हस्तकला है, जिसका अर्थ है कि ईश्वर मौजूद है और यह प्रकट करता है कि वह अद्भुत है, इस सृष्टि को बनाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, इतना बुद्धिमान है, इतना प्रतिभाशाली है कि इस बहुत व्यवस्थित सृष्टि को बना सकता है। हम दाऊद से कहीं ज़्यादा जानते हैं।

चाहे हम वृहद स्तर पर जाएं और ब्रह्मांड का अध्ययन करें या सूक्ष्म स्तर पर और कोशिका का अध्ययन करें, इसकी व्यवस्थितता आश्चर्यजनक है। यह एक व्यवस्था करने वाले, एक रचयिता, एक निर्माता की ओर इशारा करता है। इस सृष्टि का समय निरंतर है।

दिन-प्रतिदिन वे वाणी का संचार करते हैं; रात-प्रतिदिन वे ज्ञान का संचार करते हैं। पद दो, इस रहस्योद्घाटन की सीमा सार्वभौमिक है। उनका संदेश पूरी धरती पर और उनके शब्द दुनिया के छोर तक पहुँच गए हैं।

श्लोक चार, इस रहस्योद्घाटन की सार्वभौमिकता सूर्य द्वारा दर्शाई गई है, जो, उद्घरण, आकाश के एक छोर से उगता है और दूसरे छोर तक चक्कर लगाता है। उद्घरण बंद करें, श्लोक छह,

क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल। इस प्रकार बाहरी सामान्य प्रकाशन हर जगह, हर समय होता है, जो परमेश्वर के अस्तित्व और महिमा और इस तथ्य को प्रकट करता है कि वह सृष्टिकर्ता है।

यह इस रहस्योद्घाटन के मानवीय विनियोग की परवाह किए बिना संप्रेषित किया जाता है, और भजन 19 इस रहस्योद्घाटन के मानवीय विनियोग की बात नहीं करता है, लेकिन रोमियों 1 करता है। रोमियों 1 एक नए नियम की टिप्पणी है, जैसा कि यह था, विशेष रूप से नहीं, बल्कि एक सामान्य अर्थ में। भजन 19 और अन्य अंशों पर जिन्हें भजनों में उद्धृत किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, यशायाह और अय्यूब, रोमियों 1 हमारे लिए अधिक विशिष्ट हो जाता है।

रोमियों 1:18 से 25, एक बार फिर, मैं रोमियों 1 के संदर्भ से धर्मशास्त्र, शिक्षा को निकालने से पहले पाठ के साथ काम करना चाहता हूँ। जैसे ही पॉल ने अपने विषय की घोषणा की, मेरा मानना है कि इस बात पर सार्वभौमिक सहमति है कि रोमियों का विषयगत कथन रोमियों 1:16 और 17 में होता है। पॉल के परिचय के बाद जिसमें उन्होंने खुद को भगवान के सेवक, एक प्रेरित के रूप में पेश किया, मसीह के ईश्वरत्व और मानवता की बात की, और फिर रोमियों 16 और 17 के अध्याय 1 में रोम आने और उनके लिए सेवा करने की पॉल की इच्छा के बारे में बताया, उन्होंने स्पष्ट रूप से रोमियों के विषय को बताया। मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ, क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए ईश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है।

पहले यहूदी और फिर यूनानी के लिए, क्योंकि उसमें ईश्वर की धार्मिकता विश्वास से प्रकट होती है, क्योंकि विश्वास के लिए, जैसा लिखा है, धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा। मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ, जिसका अर्थ साहित्यिक व्यक्ति लेटिटियस द्वारा नकारात्मक को नकार कर एक मजबूत सकारात्मक की पुष्टि हो सकता है। इसका मतलब यह हो सकता है कि मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ, या इसका मतलब यह हो सकता है कि मैं सुसमाचार पर गर्व करता हूँ।

यह संभव है। किसी भी तरह से, हमें उसका संदेश मिलता है क्योंकि सुसमाचार ईश्वर की शक्ति है। जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह एक अपमानजनक कथन है।

संदेश ईश्वर की शक्ति है। शब्दों का एक समूह सर्वशक्तिमान ईश्वर के गुण, यहाँ तक कि उनकी शक्ति के बराबर माना जाता है। खैर, हाँ, क्योंकि संदेश ईश्वर द्वारा दिया जाता है, और वह उस संदेश में अपनी शक्ति जोड़ता है और पापियों को बचाता है, जीवन बदलता है, उन्हें अपनी पवित्र आत्मा देता है, और इसी तरह।

मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ, क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है। पौलुस वास्तव में विश्वास के महत्व पर जोर देता है। वह पत्र की शुरुआत से ही इसे सही तरीके से करता है, जिसमें उसके उद्देश्य कथन में पहले से ही कई बार शामिल है।

मुझे लगता है कि अध्याय 10 सबसे बढ़िया जगह है जहाँ उन्होंने ऐसा किया है, लेकिन उन्होंने इसे पुस्तक के पहले भाग में किया है जिसमें उन्होंने औचित्य की आवश्यकता और फिर परमेश्वर द्वारा इसके प्रावधान और इसे कैसे प्राप्त किया जाए, जो कि रोमियों 4 है, जो कि विश्वास के द्वारा

है, को दर्शाया है। सुसमाचार प्रत्येक विश्वासी के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है, सबसे पहले यहूदी के लिए, और फिर यूनानी के लिए भी। मुझे लगता है कि उनके सुसमाचार के पहले पृष्ठ से ही, जैसा कि यह था, उनके मन में रोमन चर्च की स्थिति है जहाँ यहूदी और यूनानी कुछ हद तक असहमत हैं, जैसा कि अध्याय 14 और 15 में गवाही देता है, और वह इसे ठीक करना चाहते हैं और इसलिए वह पुस्तक के माध्यम से सुसमाचार संदेश के अपने प्रकटीकरण के लगभग हर चरण में यहूदी और गैर-यहूदी के बारे में बात करते रहते हैं।

क्योंकि सुसमाचार में, ईश्वर की धार्मिकता विश्वास से विश्वास तक प्रकट होती है। मेरी समझ से यह है कि एक ही अभिव्यक्ति का इस्तेमाल दो बार किया गया है, 2 कुरिन्थियों के एक ही संदर्भ में दो बार। दरअसल, मैंने एक अध्याय खो दिया है।

यह विजयी प्रवेश अध्याय है। शायद यह अध्याय 3 है। हाँ, 2 कुरिन्थियों 3, जिसमें पॉल कहते हैं कि सुसमाचार विश्वासियों के लिए जीवन की खुशबू है और अविश्वासियों के लिए मृत्यु की खुशबू है, और इसका अर्थ सुसमाचार है, चित्र में लौटने वाले विजेता हैं जो अपने कुछ बंदियों को ले जा रहे हैं जिन्हें उन्होंने सम्राट को ट्रॉफी के रूप में पेश करने और उन्हें यातना देने के लिए जीवित रखा है, इससे पहले कि वे शायद उन्हें मार डालें और उन बेचारे बंदियों को परेड पर गिरती धूप की गंध आती है और यह बदबूदार होती है। यह सुपर बाउल उत्सव या वर्ल्ड सीरीज़ के आखिरी गेम जैसा है। एक टीम इतनी उत्साहित है कि दूसरी टीम बस अपने पेट के बल रेंग रही है।

वे बहुत निराश हैं, ऊंचे और नीचे। यह मौत की मौत की सुगंध है, वह कहते हैं। यानी, यह मौत की सुगंध है।

यह वास्तव में विजेताओं के लिए मौत की सुगंध है। आह, यह कितनी मीठी खुशबू है। यह जीवन के लिए जीवन की सुगंध है, वास्तव में जीवन की, वास्तव में जीवन की।

इसी तरह, यहाँ, मेरा मानना है कि हमें इसे स्पष्ट करना चाहिए: सुसमाचार में, परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, विश्वास से विश्वास तक, वास्तव में विश्वास से, बहुत विश्वास से, विश्वास से, पहले से आखिरी तक प्रकट होती है, कुछ अनुवाद कहते हैं। जैसा कि लिखा गया है, और वह हबक्कूक को उद्धृत करता है, धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा। इसलिए, रोमियों का विषय अच्छी खबर है, सुसमाचार, जो मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की बचाने वाली धार्मिकता का रहस्योद्घाटन है।

लेकिन पद 18 में, पौलुस परमेश्वर की बचाने वाली धार्मिकता के बारे में बात करना शुरू नहीं करता। इसके बजाय, वह परमेश्वर की दंडनीय धार्मिकता के बारे में बात करता है। क्योंकि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन सभी अधर्म और अधर्म के विरुद्ध प्रकट होता है जो सत्य को दबाते हैं। 321 तक पौलुस अपने विषय पर वापस नहीं आता।

1:18 से 3:20 तक, वह एक गहरा गड्ढा खोदता है, और वह दिखाता है कि पूरी दुनिया खाई में गिर गई है और खुद को बचा नहीं सकती। यह केवल 321 में है। दूसरे शब्दों में, पॉल को लगता है कि इस तथ्य को स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है कि लोग पापी हैं, कि वे ईश्वर के क्रोध के

अधीन हैं, और वे गंभीर संकट में हैं, इससे पहले कि वह जाए और फिर सुसमाचार की व्याख्या करे, जिसे उसने 1:16 और 17, 3:21 के बहुत ही विषयगत कथन में पेश किया।

लेकिन अब, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हो गई है। व्यवस्था के अलावा, इसका अर्थ है व्यवस्था का पालन करना, हालाँकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इसकी गवाही देते हैं, यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की धार्मिकता उन सभी के लिए जो विश्वास करते हैं। मैं प्रलोभन का विरोध करूँगा, जो कि हर सुधारवादी धर्मशास्त्री का प्रलोभन है, रोमियों के साथ और अधिक करने का। मुझे अब रोमियों को पूरी तरह से नहीं पढ़ाना चाहिए, बल्कि सृष्टि में परमेश्वर के रहस्योद्घाटन, रोमियों 1:18 और उसके बाद के बारे में पढ़ाना चाहिए।

उनका विषय परमेश्वर की बचाने वाली धार्मिकता है, लेकिन अब वे परमेश्वर की न्याय करने वाली धार्मिकता के बारे में बात करना शुरू करते हैं। परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है, रोमियों 1, 18, लोगों की सभी अधार्मिकता और अधर्म के विरुद्ध, जो अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं। कौन सा सत्य? हम किस सत्य की बात कर रहे हैं? वे इसे दबाते हैं, जिसका अर्थ है कि यह सत्य किसी तरह से उन तक पहुँचता है।

आप जो नहीं जानते उसे दबा नहीं सकते। ओह, वह समझाता है, क्योंकि परमेश्वर के बारे में जो कुछ भी जाना जा सकता है वह उनके लिए स्पष्ट है। लड़के, पॉल ने उनका ध्यान आकर्षित किया है। वह किस बारे में बात कर रहा है? क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें यह दिखाया है।

पॉल दावा कर रहा था कि ईश्वर ने मनुष्यों को कुछ, संभवतः अपने बारे में कुछ, प्रकट किया है और ईश्वर उनसे नाराज़ है; ईश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है क्योंकि वे इस ज्ञान, इस रहस्योद्घाटन, इस जानकारी को दबाते हैं जो उन्हें ईश्वर से प्राप्त होती है। और यहाँ उसका स्पष्टीकरण है। क्योंकि, यह ग्रीक में एक व्याख्यात्मक गार है, यह व्याख्या करता है, क्योंकि उसके अदृश्य गुणों को स्पष्ट रूप से देखा गया है।

पॉल, सबसे पहले, आप ईश्वर की शक्ति को एक संदेश के साथ पहचानते हैं, जो एक ज्वलंत तस्वीर है, लेकिन यह तकनीकी रूप से सच नहीं है। ईश्वर के गुण केवल उसके गुण हैं। ओह, लेकिन वह इस उद्धार संदेश के लिए अपनी शक्ति से इतना जुड़ा हुआ है कि यह कहना सच है, हालाँकि यह सचमुच ईश्वर की शक्तियों में से एक नहीं है, यह वास्तव में एक शक्तिशाली संदेश है।

और अब, आप परमेश्वर के अदृश्य गुणों को कैसे देख सकते हैं? यह असंभव है। खैर, वह उन्हें अपनी बनाई हुई चीज़ों के ज़रिए दृश्यमान बनाता है। अपने अदृश्य गुणों के लिए, और वह हमें बताता है कि वे यहाँ क्या हैं, अर्थात् उसकी शाश्वत शक्ति और दिव्य स्वभाव।

भजन 19, उसकी महिमा और तथ्य यह है कि उसने एक निर्मित हस्तकला बनाई, यही उसका सृष्टिकर्तापन है, अगर आप चाहें तो उसका सृष्टिकर्तापन। यहाँ, परमेश्वर की अदृश्य विशेषताएँ, अर्थात् उसकी अनन्त शक्ति और दिव्य प्रकृति, स्पष्ट रूप से देखी गई हैं। मनुष्य इन चीज़ों को देख सकते हैं।

संसार के निर्माण के समय से ही, सृष्टि में, बनाई गई चीज़ों में, भजन 19 में बताए गए रहस्योद्घाटन की निरंतरता है। ओह, वाह। सृष्टि के समय से ही, परमेश्वर की शक्ति और यह तथ्य कि वह परमेश्वर है, उसका दिव्य स्वभाव और उसका ईश्वरत्व मानवजाति द्वारा देखा गया है।

यह केवल यह कहना नहीं है कि ये बातें प्रकट की गई हैं, जैसा कि भजन 19 में कहा गया है। अब यह मनुष्यों द्वारा इस रहस्योद्घाटन को प्राप्त करने की बात करता है। परमेश्वर पापियों पर क्रोधित है क्योंकि वे उसकी सच्चाई को दबाते हैं।

वह किस बारे में बात कर रहा है? परमेश्वर ने उन्हें अपने कुछ गुणों के बारे में स्पष्ट रूप से बताया, यहाँ वह अपनी शक्ति और अपने ईश्वरत्व का उल्लेख करता है, उन चीज़ों में जो उसने सृष्टि के समय से बनाई हैं। वे भजन 19 की भाषा में परमेश्वर के बारे में गवाही देते हैं। नतीजा यह है कि उनके पास कोई बहाना नहीं है।

उसका क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है। मनुष्य को क्षमा नहीं किया जा सकता क्योंकि परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाए गए संसार में स्वयं को उनके सामने प्रकट किया है। क्योंकि यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, तो क्या इसका अर्थ यह है कि वे बचाए गए थे? नहीं।

हमें किसी भी साहित्य के किसी भी संदर्भ में किसी भी शब्द को परिभाषित करना है, लेकिन यहाँ, परमेश्वर को जानने का मतलब हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह को जानना नहीं है, बल्कि, जैसा कि संदर्भ ने हमें बताया है, परमेश्वर के अस्तित्व और शक्ति और उसके ईश्वरत्व को जानना, जो उसने बनाया है उसके आधार पर। हालाँकि वे परमेश्वर को जानते थे, उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान नहीं दिया या उसका धन्यवाद नहीं किया, लेकिन वे अपनी सोच में व्यर्थ हो गए, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए। यहाँ, कुछ ऐसा जोड़ा गया है जो भजन 19 में नहीं है, और वह है मानवीय पाप।

और हमारे पास दमन में प्रस्तुत विचार पहले से ही है, श्लोक 18 में, जिसने इस पूरे खंड को पेश किया। परमेश्वर का रहस्योद्घाटन पापियों तक पहुँचता है, लेकिन क्योंकि वे पापी हैं, वे इसे तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, वे इसे दबाते हैं, वे इसे तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, और हालाँकि यह ज्ञान उन तक पहुँचता है और वे परमेश्वर के बारे में जानते हैं, जैसा कि केल्विन ने कहा है, एक संवेदना है डिविनिटैटिस, भगवान के बारे में जागरूकता है। वे भगवान की पूजा नहीं करते हैं।

ओह, वे देवताओं की पूजा कर सकते हैं, लेकिन सच्चे और जीवित परमेश्वर की नहीं। रहस्योद्घाटन में कुछ भी गलत नहीं है। परमेश्वर का रेडियो स्टेशन, परमेश्वर, अपना सुसमाचार प्रसारित करता है, उसका सुसमाचार नहीं, बल्कि परमेश्वर का रहस्योद्घाटन लगातार, हर जगह, हर किसी के लिए।

लेकिन समस्या क्या है? समस्या यह है कि हमारे रिसीवर जाम हो गए हैं, हमारे रेडियो गड़बड़ा गए हैं, और हम परमेश्वर से आने वाले संदेश को विकृत कर देते हैं। यह सुसमाचार नहीं है। यह परमेश्वर के कई गुणों से संबंधित है, लेकिन उसकी कृपा, पापों की क्षमा, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान से संबंधित नहीं है।

बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए और अमर परमेश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्य, पक्षियों, जानवरों और रेंगने वाले जीवों जैसी छवियों के लिए बदल दिया। परमेश्वर का रहस्योद्घाटन और सृष्टि मनुष्यों तक पहुँचती है, लेकिन इसका परिणाम परमेश्वर की पूजा नहीं है। इसका परिणाम मूर्तिपूजा है।

इतना ही नहीं, बल्कि गलातियों 5 में शरीर के कामों की तरह, हम उन्हें धार्मिक पाप कहेंगे, मूर्तिपूजा, और ऐसी ही अन्य चीजें। मुझे ठीक से देखना है कि ऐसी अन्य चीजें क्या हैं। गलातियों 5.20 में मूर्तिपूजा और जादू-टोना का उल्लेख किया गया है। तो, यहाँ, मूर्तिपूजा के धार्मिक पाप यौन पापों के साथ जुड़े हुए हैं।

शरीर के काम, अब शरीर के काम, स्पष्ट हैं। यौन अनैतिकता, अशुद्धता, कामुकता, यौन पाप, मूर्तिपूजा, जादू-टोना, धार्मिक पाप, हम उन्हें कह सकते हैं। सूची का बाकी हिस्सा पारस्परिक पापों से संबंधित है, जो वास्तव में वही था जो गलातियों में प्रबल था और जिसे सुधारने के लिए उन्हें आत्मा के फल की आवश्यकता थी, लेकिन मैं इसे अकेला छोड़ने जा रहा हूँ।

मैं वहाँ सिर्फ़ इसी उद्देश्य से गया था, यह दिखाने के लिए कि न सिर्फ़ रोमियों 1 में बल्कि गलातियों 5 में भी, पॉल धार्मिक पापों और यौन पापों को मिलाता है। वहाँ, यह यौन पाप है, मुख्य रूप से विषमलैंगिक यौन पाप। यहाँ पॉल के मन में समलैंगिक यौन पाप हैं।

इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें उनके हृदय की अभिलाषा के अनुसार अशुद्धता में छोड़ दिया, और आपस में अपने शरीरों का अनादर किया, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के बारे में सत्य को झूठ से बदल दिया। इस आदान-प्रदान का उल्लेख दूसरी बार किया गया है। यह दुष्टता है।

पद 23, परमेश्वर की महिमा, अमर परमेश्वर की महिमा को मूर्तियों में बदल दिया। 25, उन्होंने परमेश्वर के बारे में सच्चाई को झूठ में बदल दिया और सृष्टिकर्ता की बजाय उसकी आराधना और सेवा की जो सदा धन्य है। आमीन।

और इसके बाद की आयतें यौन पापों, खास तौर पर समलैंगिक किस्म के पापों की बात करती हैं। आपके मन में भी यह सवाल उठ रहा होगा, जो मेरे मन में भी उठता है: गलातियों 5 और रोमियों 1 में धार्मिक पापों को क्यों जोड़ा गया है? यौन पापों के साथ यह कितना विरोधाभासी है। क्योंकि ये दोनों क्षेत्र, ये दोनों प्रकार के पाप मानव जीवन के उन पहलुओं के बारे में बात करते हैं जो हमें परिभाषित करते हैं।

बच्चे के जन्म के समय हम कहते हैं, यह लड़की है, यह लड़का है। और इसलिए, आदम और हव्वा को भी न केवल उसकी छवि में नर और मादा बनाया गया था, बल्कि परमेश्वर ने उन्हें अपनी छवि में बनाया, नर और मादा उसने उन्हें बनाया, और वे भी उसकी छवि में बनाए गए थे। वे अपने निर्माता के साथ संबंध के लिए बनाए गए थे।

हम जन्म से ही लिंग-भेद वाले प्राणी हैं, और हम धार्मिक प्राणी हैं; हम उपासक हैं। ओह, हम रोमियों 1 में वर्णित लोगों की तरह गलत चीजों की पूजा कर सकते हैं, और हम यौन पाप भी कर सकते हैं, लेकिन ये दोनों ही ईश्वर की छवि के वाहक के रूप में हमारी पहचान को प्रभावित

करते हैं। हमारे अगले व्याख्यान में, मैं उसी पैटर्न का पालन करूँगा और नोट्स पर वापस जाऊँगा और कुछ सिद्धांतों को स्पष्ट, स्पष्ट और स्पष्ट करूँगा जिन्हें हमने अभी पाठ में देखा है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन पवित्र शास्त्र में रहस्योद्घाटन पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 6 है, रहस्योद्घाटन का अर्थ और हमारी आवश्यकता। बाह्य सामान्य रहस्योद्घाटन, भजन 19:1-6 और रोमियों 1:18-25।